

Para 8

Sipara 8 of 30 · 142 Ayahs · Translation: Hindi

Al-An'aam

111

﴿ وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَاهُ إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ ۖ قُبُلًا ۖ ﴾
﴿ مَا كَانُوا ﴾ لِيُؤْمِنُوا ۖ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ

और (ऐ रसूल सच तो ये है कि) हम अगर उनके पास फरिश्ते भी नाज़िल करते और उनसे मुर्दे भी बातें करने लगते और तमाम (मख़फ़ी(छुपी)) चीज़ें (जैसे जन्नत व नार वग़ैरह) अगर वह ग़िरोह उनके सामने ला खड़े करते तो भी ये ईमान लाने वाले न थे मगर जब अल्लाह चाहे लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते

112

﴿ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا ۖ شَيْطِينُ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ۖ ﴾
﴿ زُخْرَفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۖ ﴾ ۖ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ

कि और (ऐ रसूल जिस तरह ये कुफ़्कार तुम्हारे दुश्मन हैं) उसी तरह (गोया हमने खुद आजमाइश के लिए शरीर आदमियों और जिनों को हर नबी का दुश्मन बनाया वह लोग एक दूसरे को फरेब देने की गरज़ से चिकनी चुपड़ी बातों की सरगोशी करते हैं और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ये लोग) ऐसी हरकत करने न पाते

113

﴿ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا ۖ ﴾ ۖ مَا هُمْ
مُقْتَرِفُونَ

तो उनको और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को छोड़ दो और ये (ये सरगोशियाँ इसलिए थीं) ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाए उनके दिल उन (की शरारत) की तरफ मायल (खिंच) हो जाएँ और उन्हें पसन्द करें

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا ۖ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ ءَاتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ ۖ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

और ताकि जो लोग इफ़तेरा परदाज़ियाँ ये लोग खुद करते हैं वह भी करने लगें (क्या तुम ये चाहते हो कि) मैं खुदा को छोड़ कर किसी और को सालिस तलाश करूँ हालाँकि वह वही खुदा है जिसने तुम्हारे पास वाज़ेए किताब नाज़िल की और जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है वह यकीनी तौर पर जानते हैं कि ये (कुरान भी) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक नाज़िल किया गया है

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا ۖ وَعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَتِهِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

तो तुम (कहीं) शक़ करने वालों से न हो जाना और सच्चाई और इन्साफ़ में तो तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो गई कोई उसकी बातों का बदलने वाला नहीं और वही बड़ा सुनने वाला वाक्फ़िकार है

وَإِنْ تُطِيعُوا أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ

और (ऐ रसूल) दुनिया में तो बहुतेरे लोग ऐसे हैं कि तुम उनके कहने पर चलो तो तुमको खुदा की राह से बहका दें ये लोग तो सिर्फ़ अपने ख्यालात की पैरवी करते हैं और ये लोग तो बस अटकल पचू बातें किया करते हैं

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

(तो तुम क्या जानों) जो लोग उसकी राह से बहके हुए हैं उनको (कुछ) खुदा ही खूब जानता है और वह तो हिदायत याफ़ता लोगों से भी खूब वाक्फ़ि है

فَكُلُوا ۖ مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ ۖ مُؤْمِنِينَ

तो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो तो जिस ज़ीबह पर (वक्ते ज़िबाह) खुदा का नाम लिया गया हो उसी को खाओ

وَمَا لَكُمْ إِلَّا تَأْكُلُوا؟ مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرَرْتُمْ إِلَيْهِ؟ وَإِنْ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ؟ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُعْتَدِينَ

और तुम्हें क्या हो गया है कि जिस पर खुदा का नाम लिया गया हो उसमें नहीं खाते हो हालाँकि जो चीजें उसने तुम पर हराम कर दी हैं वह तुमसे तफसीलन बयान कर दी हैं मगर (हाँ) जब तुम मजबूर हो तो अलबत्ता (हराम भी खा सकते हो) और बहुतेरे तो (स्वाहमस्वाह) अपनी नफसानी स्वाहिशों से बे समझे बूझे (लोगों को) वहका देते हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हक से तजाविज करने वालों से खूब वाकिफ है

وَذَرُوا؟ ظَهَرَ الْإِثْمَ وَبَاطِنُهُ؟ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا؟
يَقْتَرِفُونَ

(ऐ लोगों) ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह (दोनों) को (बिल्कुल) छोड़ दो जो लोग गुनाह करते हैं उन्हें अपने आमाल का अनकरीब ही बदला दिया जाएगा

وَلَا تَأْكُلُوا؟ مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ؟ لَفِسْقٌ؟؟ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ
إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجْدِلُوَكُمْ؟ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ

और जिस (ज़बीहे) पर खुदा का नाम न लिया गया उसमें से मत खाओ (क्योंकि) ये बेशक बदचलनी है और शयातीन तो अपने हवा खवाहों के दिल में वसवसा डाला ही करते हैं ताकि वह तुमसे (बेकार) झगड़े किया करें और अगर (कहीं) तुमने उनका कहना मान लिया तो (समझ रखो कि) बेशुबहा तुम भी मुशरिक हो

أَوْ مَنْ كَانَ مَيِّتًا؟ فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ؟ نُورًا؟ يَمْشِي بِهِ؟ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ؟
فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ؟ مِّنْهَا؟ كَذَلِكَ زِينٌ لِّلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا؟ يَعْمَلُونَ

क्या जो शरूष (पहले) मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिए एक नूर बनाया जिसके ज़रिए वह लोगों में (बेतकल्लुफ़) चलता फिरता है उस शरूष का सामना हो सकता है जिसकी ये हालत है कि (हर तरफ से) अंधेरे में (फँसा हुआ है) कि वहाँ से किसी तरह निकल नहीं सकता (जिस तरह मोमिनों के वास्ते ईमान आरास्ता किया गया) उसी तरह काफिरों के वास्ते उनके आमाल (बद) आरास्ता कर दिए गए हैं

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا ۚ فِيهَا ۚ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا
بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

(कि भला ही भला नज़र आता है) और जिस तरह मक्के में है उसी तरह हमने हर बस्ती में उनके कुसूरवारों को सरदार बनाया ताकि उनमें मक्कारी किया करें और वह लोग जो कुछ करते हैं अपने ही हक में (बुरा) करते हैं और समझते (तक) नहीं

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ ۖ قَالُوا ۖ لَنُؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۚ اللَّهُ
أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۚ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۚ صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ
وَعَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ

और जब उनके पास कोई निशानी (नबी की तसदीक के लिए) आई है तो कहते हैं जब तक हमको खुद वैसी चीज़ (वही वगैरह) न दी जाएगी जो पैग़म्बराने खुदा को दी गई है उस वक्त तक तो हम ईमान न लाएँगे और खुदा जहाँ (जिस दिल में) अपनी पैग़म्बरी करार देता है उसकी (काबलियत व सलाहियत) को खूब जानता है जो लोग (उस जुर्म के) मुजरिम हैं उनको अनक़रीब उनकी मक्कारी की सज़ा में खुदा के यहाँ बड़ी ज़िल्लत और सख्त अज़ाब होगा

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ ۖ يَشْرَحْ صَدْرَهُ ۚ لِلْإِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ ۖ يَجْعَلْ
صَدْرَهُ ۚ ضَيِّقًا حَرَجًا ۚ ۖ كَأَنَّمَا يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ
عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

तो खुदा जिस शख्स को राह रास्त दिखाना चाहता है उसके सीने को इस्लाम (की दौलियत) के वास्ते (साफ़ और) कुशादा (चौड़ा) कर देता है और जिसको गुमराही की हालत में छोड़ना चाहता है उनके सीने को तंग दुश्वार गुबार कर देता है गोया (कुबूल ईमान) उसके लिए आसमान पर चढ़ना है जो लोग ईमान नहीं लाते खुदा उन पर बुराई को उसी तरह मुसल्लत कर देता है

وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمٌ ۖ ۖ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ ۖ يَذْكُرُونَ

और (ऐ रसूल) ये (इस्लाम) तुम्हारे परवरदिगार का (बनाया हुआ) सीधा रास्ता है इबरत हासिल करने वालों के वास्ते हमने अपने आयात तफसीलन बयान कर दिए हैं

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

उनके वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अमन व चैन का घर (बेहशत) है और दुनिया में जो कारगुजारियाँ उन्होने की थीं उसके ऐवज़ खुदा उन का सरपरस्त होगा

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ يُمْعَشَرُ الْجِنَّ قَدْ اُسْتُكْثِرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيَاؤُهُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اُسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ ۚ وَبَلَّغْنَا اَجَلَنَا الَّذِي اُجِّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ
مَثْوَاكُمْ خُلْدَيْنِ فِيهَا اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ

और (ऐ रसूल वह दिन याद दिलाओ) जिस दिन खुदा सब लोगों को जमा करेगा और शयातीन से फरमाएगा, ऐ गिरोह जिन्नात तुमने तो बहुतेरे आदमियों को (बहका बहका कर) अपनी जमाअत बड़ी कर ली (और) आदमियों से जो लोग (उन शयातीन के दुनिया में) दोस्त थे कहेंगे ऐ हमारे पालने वाले (दुनिया में) हमने एक दूसरे से फायदा हासिल किया और अपने किए की सज़ा पाने को, जो वक्त तू ने हमारे लिए मुअय्युन किया था अब हम अपने उस वक्त (क्रयामत) में पहुँच गए खुदा उसके जवाब में, फरमाएगा तुम सब का ठिकाना जहन्नुम है और उसमें हमेशा रहोगे मगर जिसे खुदा चाहे (नजात दे) बेशक तेरा परवरदिगार हिकमत वाला वाक्फिकार है

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۚ بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُوْنَ

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का उनके करतूतों की बदौलत सरपरस्त बनाएँगे

يُمْعَشَرُ الْجِنَّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ ۚ مِّنْكُمْ يَقْصُوْنَ عَلَيْكُمْ ءَايٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاءِ
يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوا ۚ شَهِدْنَا عَلٰى اَنْفُسِنَا ۚ وَغَرَّتْهُمْ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا ۚ عَلٰى
اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوا ۚ كُفْرِيْنَ

(फिर हम पूछेंगे कि क्यों) ऐ गिरोह जिन व इन्स क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैगम्बर नहीं आए जो तुम तुमसे हमारी आयतें बयान करें और तुम्हें तुम्हारे उस रोज़ (क्रयामत) के पेश आने से डराएँ वह सब अर्ज करेंगे (बेशक आए थे) हम खुद अपने ऊपर आप अपने (खिलाफ) गवाही देते हैं (वाकई) उनको दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी ने उन्हें अंधेरे में डाल रखा और उन लोगों ने अपने खिलाफ आप गवाही दीं

ذَلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ ۖ وَأَهْلُهَا غَفُلُونَ

बेशक ये सब के सब काफिर थे और ये (पैगम्बरों का भेजना सिर्फ) उस वजह से है कि तुम्हारा परवरदिगार कभी बस्तियों को ज़ुल्म ज़बरदस्ती से वहाँ के बाशिन्दों के ग़फलत की हालत में हलाक नहीं किया करता

وَلِكُلِّ ۖ دَرَجَتٌ ۖ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ ۖ وَمَا رَبُّكَ بِغَفِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ

और जिसने जैसा (भला या बुरा) किया है उसी के मुवाफ़िक़ हर एक के दरजात हैं

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ ۖ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ ۖ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ ءَاخِرِينَ

और जो कुछ वह लोग करते हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं और तुम्हारा परवरदिगार बे परवाह रहम वाला है - अगर चाहे तो तुम सबके सबको (दुनिया से उड़ा) ले लाए और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारा जानशीन बनाए जिस तरह आखिर तुम्हें दूसरे लोगों की औलाद से पैदा किया है

إِنَّ مَا تُوْعَدُونَ لَءَاتٍ ۖ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ

बेशक जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर (एक न एक दिन) आने वाली है

قُلْ يُقَوْمِ أَعْمَلُوا ۖ ۖ عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ تَكُونُ لَهُ ۖ عُقَبَةُ الدَّارِ ۖ ۖ إِنَّهُ ۖ ۖ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

और तुम उसके लाने में (खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते (ऐ रसूल तुम उनसे) कहो कि ऐ मेरी क़ौम तुम बजाए खुद जो चाहो करो मैं (बजाए खुद) अमल कर रहा हूँ फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आख़ेरत (बेहश्त) किसके लिए है (तुम्हारे लिए या हमारे लिए) ज़ालिम लोग तो हरगिज़ कामयाब न होंगे

وَجَعَلُوا ۚ لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا ۚ فَقَالُوا ۚ هَذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَذَا لِشُرَكَائِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ

और ये लोग खुदा की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से हिस्सा करार देते हैं और अपने ख्याल के मुवाफिक कहते हैं कि ये तो खुदा का (हिस्सा) है और ये हमारे शरीकों का (यानि जिनको हमने खुदा का शरीक बनाया) फिर जो खास उनके शरीकों का है वह तो खुदा तक नहीं पहुँचने का और जो हिस्सा खुदा का है वो उसके शरीकों तक पहुँच जाएगा ये क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं और उसी तरह बहुतेरे मुशरकीन को उनके शरीकों ने अपने बच्चों को मार डालने को अच्छा कर दिखाया है

وَكَذَلِكَ زَيْنَ لِكَثِيرٍ ۚ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتَلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَائُهُمْ لِيَرُدُّوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا ۚ عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۚ فَذَرَهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ

ताकि उन्हें (बंदी) हलाकत में डाल दें और उनके सच्चे दीन को उन पर मिला जुला दें और अगर खुदा चाहता तो लोग ऐसा काम न करते तो तुम (ऐ रसूल) और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को (खुदा पर) छोड़ दो और ये लोग अपने ख्याल के मुवाफिक कहने लगे कि ये चौपाए और ये खेती अच्छी है

وَقَالُوا ۚ هَذِهِ ۚ أَنْعَمُ ۚ وَحَرْتُ حِجْرًا ۚ لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَمُ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَمُ ۚ لَا يَذْكُرُونَ أَسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا ۚ يَفْتَرُونَ

उनको सिवा उसके जिसे हम चाहें कोई नहीं खा सकता और (उनका ये भी ख्याल है) कि कुछ चारपाए ऐसे हैं जिनकी पीठ पर सवारी लादना हाराम किया गया और कुछ चारपाए ऐसे हैं जिन पर (ज़िबह के वक्त) खुदा का नाम तक नहीं लेते और फिर यह ढकोसले (खुदा की तरफ मनसूब करते) हैं ये सब खुदा पर इफ़तेरा व बोहतान है खुदा उनके इफ़तेरा परदाज़ियों को बहुत जल्द सज़ा देगा

وَقَالُوا ۚ مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ ۚ لِذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٍ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۚ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً ۚ فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ

और कुफ़्फ़ार ये भी कहते हैं कि जो बच्चा (वक्त ्रजवाह) उन जानवरों के पेट में है (जिन्हें हमने बुतों के नाम कर छोड़ा और जिन्दा पैदा होता तो) सिर्फ हमारे मर्दों के लिए हलाल है और हमारी औरतों पर हराम है और अगर वह मरा हुआ हो तो सब के सब उसमें शरीक हैं खुदा अनकरीब उनको बातें बनाने की सज़ा देगा बेशक वह हिकमत वाला बड़ा वाक्किफ़कार है

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا ۚ أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا ۚ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ وَحَرَّمُوا ۚ مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً ۚ عَلَىٰ اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا ۚ وَمَا كَانُوا ۚ مُهْتَدِينَ ۚ

बेशक जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे समझे बूझे बेवकूफी से मार डाला और जो रोज़ी खुदा ने उन्हें दी थी उसे खुदा पर इफ़तेरा (बोहतान) बाँध कर अपने ऊपर हराम कर डाला और वह सख्त घाटे में है ये यकीनन राहे हक़ से भटक गये और ये हिदायत पाने वाले थे भी नहीं

ۚ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ ۚ مَّعْرُوشَاتٍ ۚ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ ۚ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا ۚ أَكْلُهُ ۚ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَبِهًا ۚ وَغَيْرَ مُتَشَبِهٍ ۚ كُلُوا ۚ مِن ثَمَرِهِ ۚ إِذَا أَثْمَرَ ۚ وَءَاتُوا ۚ حَقَّهُ ۚ يَوْمَ حَصَادِهِ ۚ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۚ

और वह तो वही खुदा है जिसने बहुतेरे बाग़ पैदा किए (जिनमें मुख्तलिफ़ दरख्त हैं - कुछ तो अंगूर की तरह टट्टियों पर) चढ़ाए हुए और (कुछ) बे चढ़ाए हुए और खजूर के दरख्त और खेती जिसमें फल मुख्तलिफ़ किस्म के हैं और ज़ैतून और अनार बाज़ तो सूरत रंग मज़े में, मिलते जुलते और (बाज़) बेमेल (लोगों) जब ये चीज़े फलें तो उनका फल खाओ और उन चीज़ों के काटने के दिन खुदा का हक़ (ज़कात) दे दो और खबरदार फज़ूल खर्ची न करो - क्यों कि वह (खुदा) फुज़ूल खर्च से हरगिज़ उलफ़त नहीं रखता

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ ۚ وَفَرَشٌ ۚ كُلُوا ۚ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا ۚ خُطُوتَ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ ۚ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ

और चारपायों में से कुछ तो बोझ उठाने वाले (बड़े बड़े) और कुछ ज़मीन से लगे हुए (छोटे छोटे) पैदा किए खुदा ने जो तुम्हें रोज़ी दी है उस में से खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो

ثُمَّ نِيَّةَ أَزْوَاجٍ ۚ [۱] مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ [۲] قُلْ ءَالِ الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ
الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ [۳] نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(क्यों कि) वह तो यक्रीनन तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (खुदा ने नर मादा मिलाकर) आठ (किस्म के) जोड़े पैदा किए हैं - भेड़ से (नर मादा) दो और बकरी से (नर मादा) दो (ऐ रसूल उन काफिरों से) पूछो तो कि खुदा ने (उन दोनों भेड़ बकरी के) दोनों नरों को हाराम कर दिया है या उन दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो उन दोनों मादनियों के पेट से अन्दर लिए हुए हैं

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ [۴] قُلْ ءَالِ الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ [۵] أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّلَكُمُ اللَّهُ بِهَذَا [۶] فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ
أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا [۷] لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ [۸] إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा समझ के मुझे बताओ और ऊँट के (नर मादा) दो और गाय के (नर मादा) दो (ऐ रसूल तुम उनसे) पूछो कि खुदा ने उन दोनों (ऊँट गाय के) नरों को हाराम किया या दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो दोनों मादनियों के पेट अपने अन्दर लिये हुए हैं क्या जिस वक्त खुदा ने तुमको उसका हुक्म दिया था तुम उस वक्त मौजूद थे फिर जो खुदा पर झूठ बोताहन बाँधे उससे ज्यादा ज़ालिम कौन होगा ताकि लोगों के वे समझे बूझे गुमराह करें खुदा हरगिज़ ज़ालिम क्रौम में मंज़िले मकसूद तक नहीं पहुँचाता

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ [۹] إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ
دَمًا [۱०] مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ [۱१] فَإِنَّهُ [۱२] رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهْلًا لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ [۱३] فَمَنْ
أَضْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ [۱४] وَلَا عَادٍ [۱५] فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ [۱६] رَّحِيمٌ [१७]

(ऐ रसूल) तुम कहो कि मैं तो जो (कुरान) मेरे पास वही के तौर पर आया है उसमें कोई चीज़ किसी खाने वाले पर जो उसको खाए हाराम नहीं पाता मगर जबकि वह मुर्दा या बहता हुआ खून या सूअर का गोश्त हो तो बेशक ये (चीजे) नापाक और हाराम हैं या (वह जानवर) नाफरमानी का बाएस हो कि (वक्ते ज़िबहा) खुदा के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो फिर जो शख्स (हर तरह) बेबस हो जाए (और) नाफरमान व सरकश न हो और इस हालत में खाए तो अलबत्ता तुम्हारा परवरदिगार बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا ۖ حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ ۚ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُرُهُمَا أَوْ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ۚ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۚ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ

और हमने यहूदियों पर तमाम नाखूनदार जानवर हराम कर दिये थे और गाय और बकरी दोनों की चरबियां भी उन पर हराम कर दी थी मगर जो चरबी उनकी दोनों पीठ या आतों पर लगी हो या हड्डी से मिली हुई हो (वह हलाल थी) ये हमने उन्हें उनकी सरकशी की सज़ा दी थी और उसमें तो शक ही नहीं कि हम ज़रूर सच्चे हैं

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ ۚ ۚ وَسِعَتْ ۚ ۚ وَلَا يُرِدُّ بِأَسْهٍ ۚ ۚ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ

(ऐ रसूल) पर अगर वह तुम्हें झुठलाएं तो तुम (जवाब) में कहो कि (अगरचे) तुम्हारा परवरदिगार बड़ी वसीह रहमत वाला है मगर उसका अज़ाब गुनाहगार लोगों से टलता भी नहीं

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ ۚ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ ۚ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا ۚ ۚ بِأَسْنَا ۚ ۚ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ ۚ ۚ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۚ ۚ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ

अनक़रीब मुशरेकीन कहेंगे कि अगर खुदा चाहता तो न हम लोग शिर्क करते और न हमारे बाप दादा और न हम कोई चीज़ अपने ऊपर हराम करते उसी तरह (बातें बना बना के) जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं (पैग़म्बरों को) झुठलाते रहे यहाँ तक कि उन लोगों ने हमारे अज़ाब (के मज़े) को चखा (ऐ रसूल) तुम कहो कि तुम्हारे पास कोई दलील है (अगर है) तो हमारे (दिखाने के) वास्ते उसको निकालो (दलील तो क्या) पेश करोगे तुम लोग तो सिर्फ अपने ख्याल ख़ाम की पैरवी करते हो और सिर्फ अटकल पचू बातें करते हो

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَلِغَةُ ۚ ۚ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْكُمْ أَجْمَعِينَ

(ऐ रसूल) तुम कहो कि (अब तुम्हारे पास कोई दलील नहीं है) खुदा तक पहुंचाने वाली दलील खुदा ही के लिए ख़ास है

قُلْ هَلْ شُهِدَآءُكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا ؟ فَإِنْ شَهِدُوا ؟ فَلَا تَشْهَدْ
مَعَهُمْ ؟ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا ؟ بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ
بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ

फिर अगर वही चाहता तो तुम सबकी हिदायत करता (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (अच्छा) अपने गवाहों को लाकर हाज़िर करो जो ये गवाही दें कि ये चीज़ें (जिन्हें तुम हराम मानते हो) खुदा ही ने हराम कर दी हैं फिर अगर (बिलग़रज़) वह गवाही दे भी दे तो (ऐ रसूल) कहीं तुम उनके साथ गवाही न देना और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आखिरत पर ईमान नहीं लाते और दूसरों को अपने परवरदिगार का हम सर बनाते हैं उनकी नफ़सियानी स्वाहिशों पर न चलना

؟ قُلْ تَعَالَوْا ؟ أَتُلُّ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ؟ أَلَّا تُشْرِكُوا ؟ بِهِ ؟ شَيْءٌ ؟ وَبِالْوَالِدَيْنِ
إِحْسَنًا ؟ وَلَا تَقْتُلُوا ؟ أَوْلَادَكُمْ مِمَّنْ إِمْلَقٍ ؟ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ؟ وَلَا تَقْرُبُوا ؟
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطْنٌ ؟ وَلَا تَقْتُلُوا ؟ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ؟
ذَلِكَ وَصَّيْكُمْ بِهِ ؟ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि (बेबस) आओ जो चीज़ें खुदा ने तुम पर हराम की हैं वह मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाऊँ (वह) यह कि किसी चीज़ को खुदा का शरीक न बनाओ और माँ बाप के साथ नेक सुलूक करो और मुफ़लिसी के ख़ौफ़ से अपनी औलाद को मार न डालना (क्योंकि) उनको और तुमको रिज़क देने वाले तो हम हैं और बदकारियों के करीब भी न जाओ स्वाह (चाहे) वह ज़ाहिर हो या पोशीदा और किसी जान वाले को जिस के क़त्ल को खुदा ने हराम किया है न मार डालना मगर (किसी) हक़ के ऐवज़ में वह बातें हैं जिनका खुदा ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम लोग समझो और यतीम के माल के करीब भी न जाओ

وَلَا تَقْرُبُوا ؟ مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ؟ وَأَوْفُوا ؟ الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ؟ لَا تَكْلِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ؟ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا ؟ وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَى ؟ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ؟ ؟ ذَلِكَ وَصَّيْكُمْ بِهِ ؟ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

लेकिन इस तरीके पर कि (उसके हक़ में) बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी की हद को पहुँच जाए और इन्साफ़ के साथ नाप और तौल पूरी किया करो हम किसी शख्स को उसकी ताक़त से बढ़कर तकलीफ़ नहीं देते और (चाहे कुछ हो मगर) जब बात कहो तो इन्साफ़ से अगरचे वह (जिसके तुम खिलाफ़ न हो) तुम्हारा अज़ीज़ ही (क्यों न) हो और खुदा के एहद व पैग़ाम को पूरा करो यह वह बातें हैं जिनका खुदा ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम इब्रत हासिल करो और ये भी (समझ लो) कि यही मेरा सीधा रास्ता है

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۖ فَاتَّبِعُوهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا ۚ السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ۚ ذَلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ ۚ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

तो उसी पर चले जाओ और दूसरे रास्ते पर न चलो कि वह तुमको खुदा के रास्ते से (भटकाकर) तितर बितर कर देंगे यह वह बातें हैं जिनका खुदा ने तुमको हक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बनो

ثُمَّ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا ۚ لِكُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُدًى ۚ وَرَحْمَةً ۚ لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ

फिर हमने जो नेक्री करें उस पर अपनी नेअमत पूरी करने के वास्ते मूसा को किताब (तौरौत) अता फरमाई और उसमें हर चीज़ की तफ़सील (बयान कर दी) थी और (लोगों के लिए अज़सरतापा(सर से पैर तक)) हिदायत व रहमत है ताकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करें

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ ۖ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا ۚ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

और ये किताब (कुरान) जिसको हमने (अब नाज़िल किया है क्या है-बरक़त वाली किताब) है तो तुम लोग उसी की पैरवी करो (और खुदा से) डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए

أَنْ تَقُولُوا ۚ إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفْلِينَ

(और ऐ मुशरेकीन ये किताब हमने इसलिए नाज़िल की कि तुम कहीं) यह कह बैठो कि हमसे पहले किताब खुदा तो बस सिर्फ़ दो ही गिरोहों (यहूद व नसारा) पर नाज़िल हुई थी अगरचे हम तो उनके पढ़ने (पढ़ाने) से बेखबर थे

أَوْ تَقُولُوا ۚ لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى ۚ وَرَحْمَةً ۚ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۚ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا ۚ يَصْدِفُونَ

या ये कहने लगो कि अगर हम पर किताबे (खुदा नाज़िल होती तो हम उन लोगों से कहीं बढ़कर रहे रास्त पर होते तो (देखो) अब तो यकीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास एक रौशन दलील है (किताबे खुदा) और हिदायत और रहमत आ चुकी तो जो शख्स खुदा के आयात को झुठलाए और उससे मुँह फेरे उनसे बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो लोग हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं हम उनके मुँह फेरने के बदले में अनकरीब ही बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे (ऐ रसूल) क्या ये लोग सिर्फ उसके मुन्तिज़र है कि उनके पास फरिश्ते आएँ

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۚ يَوْمَ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامِنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِى إِيْمَنِهَا خَيْرًا ۚ ۚ قُلِ أَنْتَظِرُوا ۚ إِنَّا مُنْتَظِرُونَ

या तुम्हारा परवरदिगार खुद (तुम्हारे पास) आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियाँ आ जाएँ (आखिरकार क्योकर समझाया जाए) हालांकि जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की बाज़ निशानियाँ आ जाएंगी तो जो शख्स पहले से ईमान नहीं लाया होगा या अपने मोमिन होने की हालत में कोई नेक काम नहीं किया होगा तो अब उसका ईमान लाना उसको कुछ भी मुफ़ीद न होगा - (ऐ रसूल) तुम (उनसे) कह दो कि (अच्छा यही सही) तुम (भी) इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا ۚ دِينَهُمْ وَكَانُوا ۚ شِيَعًا ۚ لَسْتُ مِنْهُمْ فِى شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا ۚ يَفْعَلُونَ

बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरका डाला और कई फरीक बन गए थे उनसे कुछ सरोकार नहीं उनका मामला तो सिर्फ खुदा के हवाले है फिर जो कुछ वह दुनिया में नेक या बद किया करते थे वह उन्हें बता देगा (उसकी रहमत तो देखो)

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ ۚ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

जो शख्स नेकी करेगा तो उसको दस गुना सवाब अता होगा और जो शख्स बदी करेगा तो उसकी सज़ा उसको बस उतनी ही दी जाएगी और वह लोग (किसी तरह) सताए न जाएंगे

قُلْ إِنِّي هَدَيْتَنِي رَبِّيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قَدِيمًا ۚ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानि एक मज़बूत दीन इबराहीम के मज़हब की हिदायत फरमाई है बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे

قُلْ إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) तुम उन लोगों से कह दो कि मेरी नमाज़ मेरी इबादत मेरा जीना मेरा मरना सब खुदा ही के वास्ते है जो सारे जहाँ का परवरदिगार है

لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا ۚ أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ

और उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला हूँ

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغَىٰ رَبًّا ۚ وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

(ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि क्या मैं खुदा के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाश करूँ हालाँकि वह तमाम चीजों का मालिक है और जो शख्स कोई बुरा काम करता है उसका (वबाल) उसी पर है और कोई शख्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता देगा

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ ۚ دَرَجَاتٍ ۚ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ ۚ لَغَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ ۚ

और वही तो वह (खुदा) है जिसने तुम्हें ज़मीन में (अपना) नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो (नेअमत) तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमतेहान करे उसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْمَصَّ

अलिफ़ लाम मीम स्वाद

2

كِتَبُ أَنْزَلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ ۖ مِنْهُ لِتُنذِرَ بِهِ ۚ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) ये किताब खुदा (कुरान) तुम पर इस गरज़ से नाज़िल की गई है ताकि तुम उसके ज़रिये से लोगों को अज़ाबे खुदा से डराओ और ईमानदारों के लिए नसीहत का बायस हो

3

اتَّبِعُوا ۚ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا ۚ مَن دُونِهِ ۚ أُولَٰئِكَ ۚ قَلِيلٌ ۚ مَا تَذَكَّرُونَ

तुम्हारे दिल में उसकी वजह से कोई न तंगी पैदा हो (लोगों) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे (फर्जी) बुतों (माबुदों) की पैरवी न करो

4

وَكَمْ مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَّتًا ۖ أَوْ هُمْ قَائِلُونَ

तुम लोग बहुत ही कम नसीहत कुबूल करते हो और क्या (तुम्हें) ख़बर नहीं कि ऐसी बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला तो हमारा अज़ाब (ऐसे वक्त) आ पहुँचा

5

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بِأُسْنَا إِلَّا أَن قَالُوا ۚ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ

कि वह लोग या तो रात की नींद सो रहे थे या दिन को क़लीला (खाने के बाद का लेटना) कर रहे थे तब हमारा अज़ाब उन पर आ पड़ा तो उनसे सिवाए इसके और कुछ न कहते बन पड़ा कि हम बेशक ज़ालिम थे

6

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ

फिर हमने तो ज़रूर उन लोगों से जिनकी तरफ पैग़म्बर भेजे गये थे (हर चीज़ का) सवाल करेंगे और खुद पैग़म्बरों से भी ज़रूर पूछेंगे

7

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ ۚ ۚ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ

फिर हम उनसे हकीकत हाल खूब समझ बूझ के (ज़रा ज़रा) दोहराएंगे

8

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۚ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

और हम कुछ गायब तो थे नहीं और उस दिन (आमाल का) तौला जाना बिल्कुल ठीक है फिर तो जिनके (नेक अमाल के) पल्ले भारी होंगे तो वही लोग फायज़ुलहराम (नजात पाये हुए) होंगे

9

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۚ فَأُو۟لَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا۟ ۚ أَنفُسَهُمۢ بِمَا كَانُوا۟ ۚ بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ

(और जिनके नेक अमाल के) पल्ले हलके होंगे तो उन्हीं लोगों ने हमारी आयत से नाफरमानी करने की वजह से यक़ीनन अपना आप नुक़सान किया

10

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعِيشَ ۚ ۚ قَلِيلًا ۚ ۚ مَا تَشْكُرُونَ

और (ऐ बनीआदम) हमने तो यक़ीनन तुमको ज़मीन में कुदरत व इख़तेदार दिया और उसमें तुम्हारे लिए असबाब ज़िन्दगी मुहय्या किए (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो

11

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا۟ لِآدَمَ فَسَجَدُوا۟ ۚ ۚ إِلَّا إِبْلِيسَ
لَمْ يَكُن مِّنَ السَّٰجِدِينَ

हालाकि इसमें तो शक ही नहीं कि हमने तुम्हारे बाप आदम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरते बनायीं फिर हमने फ़रिश्तों से कहा कि तुम सब के सब आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक पड़े मगर शैतान कि वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ।

12

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۚ ۚ قَالَ أَنَا۟ ۚ ۚ خَيْرٌ ۚ ۚ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ ۚ ۚ
وَخَلَقْتَهُ ۚ ۚ مِن طِينٍ ۚ ۚ

खुदा ने (शैतान से) फरमाया जब मैंने तुझे हुक्म दिया कि तू फिर तुझे सजदा करने से किसी ने रोका कहने लगा मैं उससे अफ़ज़ल हूँ (क्योंकि) तूने मुझे आग (ऐसे लतीफ अनसर) से पैदा किया

13

قَالَ فَأَهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصُّغَرِينَ

और उसको मिट्टी (ऐसी कशीफ़ अनसर) से पैदा किया खुदा ने फरमाया (तुझको ये गुरुर है) तो बेहश्त से नीचे उतर जाओ क्योंकि तेरी ये मजाल नहीं कि तू यहाँ रहकर गुरुर करे तो यहाँ से (बाहर) निकल बेशक तू ज़लील लोगों से है

14

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ

कहने लगा तो (खैर) हमें उस दिन तक की (मौत से) मोहलत दे

15

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ

जिस दिन सारी खुदाई के लोग दुबारा जिलाकर उठा खड़े किये जाएंगे

16

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ

फरमाया (अच्छा मंजूर) तुझे ज़रूर मोहलत दी गयी कहने लगा चूँकि तूने मेरी राह मारी तो मैं भी तेरी सीधी राह पर बनी आदम को (गुमराह करने के लिए) ताक में बैटूँ तो सही

17

ثُمَّ لَءَاتَيْنَهُمْ مِّنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَنِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ[؟] وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ

फिर उन लोगों से और उनके पीछे से और उनके दाहिने से और उनके बाएं से (गरज़ हर तरफ से) उन पर आ पड़ूँगा और (उनको बहकाऊंगा) और तू उन में से बहुतरो की शुक्रगुजार नहीं पायेगा

18

قَالَ أَخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا[؟] مَّدْحُورًا[؟] لِّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ

खुदा ने फरमाया यहाँ से बुरे हाल में (राइन्दा होकर निकल) (दूर) जा उन लोगों से जो तेरा कहा मानेगा तो मैं यक्रीनन तुम (और उन) सबको जहन्नूम में भर दूँगा

وَيَأْتِيهِمْ أَكْثَرُ مِنْ هَٰذَا ۖ فَكَفَىٰ ۚ
فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ

और (आदम से कहा) ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीबी (दोनों) बेहश्त में रहा सहा करो और जहाँ से चाहो खाओ (पियो) मगर (खबरदार) उस दरख्त के करीब न जाना वरना तुम अपना आप नुकसान करोगे

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُفِّيَهُمَا فِي سَوَاءٍ مِمَّا نَسَبُوا وَكَانَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ
وَنَهَىٰ كُلًّا رَبُّكُمَا عَنْ هَٰذِهِ الشَّجَرَةِ ۖ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ

फिर शैतान ने उन दोनों को वसवसा (शक) दिलाया ताकि (नाफरमानी की वजह से) उनके अस्तर की चीज़ें जो उनकी नज़र से बेहश्ती लिबास की वजह से पोशीदा थी खोल डाले कहने लगा कि तुम्हारे परवरदिगार ने दोनों को दरख्त (के फल खाने) से सिर्फ इसलिए मना किया है (कि मुबादा) तुम दोनों फरिश्ते बन जाओ या हमेशा (ज़िन्दा) रह जाओ

وَقَاَسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ

और उन दोनों के सामने कसमें खायीं कि मैं यकीनन तुम्हारा खैर स्वाह हूँ

فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْءَتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ
عَلَيْهِمَا مِنْ وَرَقٍ ۖ وَالنَّارُ تَنْصَرِفُ ۚ وَأَنذَرَهُمَا رَبُّهُمَا أَنَّهُمَا أَلَمَ أَنَّهُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقْلَ
لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ

गरज़ धोखे से उन दोनों को उस (के खाने) की तरफ ले गया गरज़ जो ही उन दोनों ने इस दरख्त (के फल) को चखा कि (बेहश्ती लिबास गिर गया और समझ पैदा हुई) उन पर उनकी शर्मगाहें ज़ाहिर हो गयीं और बेहश्त के पत्ते (तोड़ जोड़ कर) अपने ऊपर ढापने लगे तब उनको परवरदिगार ने उनको आवाज़ दी कि क्यों मैंने तुम दोनों को इस दरख्त के पास (जाने) से मना नहीं किया था और (क्या) ये न जता दिया था कि शैतान तुम्हारा यकीनन खुला हुआ दुश्मन है

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ

ये दोनों अर्ज करने लगे ऐ हमारे पालने वाले हमने अपना आप नुकसान किया और अगर तू हमें माफ न फरमाएगा और हम पर रहम न करेगा तो हम बिल्कुल घाटे में ही रहेंगे

قَالَ أَهْبِطُوا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَمَتَّعٌ إِلَيَّ حِينٍ ۚ

हुक्म हुआ तुम (मियां बीबी शैतान) सब के सब बेहशत से नीचे उतरो तुममें से एक का एक दुश्मन है और (एक खास) वक्त तक तुम्हारा ज़मीन में ठहराव (ठिकाना) और ज़िन्दगी का सामना है

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ

खुदा ने (ये भी) फरमाया कि तुम ज़मीन ही में ज़िन्दगी बसर करोगे और इसी में मरोगे

يَبْنَىٰ آدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا ۚ يُورِي سَوْءَاتِكُمْ وَرِيشًا ۚ وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ ءَايَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ

और उसी में से (और) उसी में से फिर दोबारा तुम ज़िन्दा करके निकाले जाओगे ऐ आदम की औलाद हमने तुम्हारे लिए पोशाक नाज़िल की जो तुम्हारे शर्मगाहों को छिपाती है और ज़ीनत के लिए कपड़े और इसके अलावा परहेज़गारी का लिबास है और ये सब (लिबासों) से बेहतर है ये (लिबास) भी खुदा (की कुदरत) की निशानियों से है

يَبْنَىٰ آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْءَاتِهِمَا ۚ إِنَّهُ ۚ يَرَائِكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ ۚ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۚ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

ताकि लोग नसीहत व इबरत हासिल करें ऐ औलादे आदम (होशियार रहो) कहीं तुम्हें शैतान बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे बाप माँ आदम व हव्वा को बेहशत से निकलवा छोड़ा उसी ने उन दोनों से (बेहशती) पोशाक उतरवाई ताकि उन दोनों को उनकी शर्मगाहें दिखा दे वह और उसका कुनबा ज़रूर तुम्हें इस तरह देखता रहता है कि तुम उन्हे नहीं देखने पाते हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का रफ़ीक़ करार दिया है

وَإِذَا فَعَلُوا ۚ فَحِشَةً ۚ قَالُوا ۚ وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

जो ईमान नहीं रखते और वह लोग जब कोई बुरा काम करते हैं कि हमने उस तरीके पर अपने बाप दादाओं को पाया और खुदा ने (भी) यही हुक्म दिया है (ऐ रसूल) तुम साफ कह दो कि खुदा ने (भी) यही हुक्म दिया है (ऐ रसूल) तुम (साफ) कह दो कि खुदा हरगिज़ बुरे काम का हुक्म नहीं देता क्या तुम लोग खुदा पर (इफ्तिरा करके) वह बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۚ وَأَقِيمُوا ۚ وَجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ ۚ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ का हुक्म दिया है और (ये भी करार दिया है कि) हर नमाज़ के वक्त अपने अपने मुँह (क़िबले की तरफ़) सीधे कर लिया करो और इसके लिए निरी खरी इबादत करके उससे दुआ मांगो जिस तरह उसने तुम्हें शुरू शुरू पैदा किया था

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۚ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا ۚ الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ

उसी तरह फिर (दोबारा) ज़िन्दा किये जाओगे उसी ने एक फरीक की हिदायत की और एक गिरोह (के सर) पर गुमराही सवार हो गई उन लोगों ने खुदा को छोड़कर शैतानों को अपना सरपरस्त बना लिया और बावजूद उसके गुमराह करते हैं कि वह राह रास्ते पर है

ۚ يَبْنِي ۚ آدَمَ خُذُوا ۚ زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ ۚ وَكُلُوا ۚ وَاشْرَبُوا ۚ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ

ऐ औलाद आदम हर नमाज़ के वक्त बन सवर के निखर जाया करो और खाओ और पियो और फिज़ूल खर्ची मत करो (क्योंकि) खुदा फिज़ूल खर्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ؟ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ؟ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ؟ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल से) पूछो तो कि जो ज़ीनत (के साज़ों सामान) और खाने की साफ सुथरी चीज़ें खुदा ने अपने बन्दो के वास्ते पैदा की हैं किसने हराम कर दी तुम खुद कह दो कि सब पाक़ीज़ा चीज़े क़यामत के दिन उन लोगों के लिए ख़ास हैं जो दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी में ईमान लाते थे हम यूँ अपनी आयतें समझदार लोगों के वास्ते तफ़सीलदार बयान करते हैं

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

(ऐ रसूल) तुम साफ कह दो कि हमारे परवरदिगार ने तो तमाम बदकारियों को ख़्वाह (चाहे) ज़ाहिरी हो या बातिनी और गुनाह और नाहक़ ज्यादती करने को हराम किया है और इस बात को कि तुम किसी को खुदा का शरीक बनाओ जिनकी उनसे कोई दलील न ही नाज़िल फरमाई और ये भी कि वे समझे बूझे खुदा पर बोहतान बाँधें

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً؟ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ

और हर गिरोह (के न पैदा होने) का एक ख़ास वक़्त है फिर जब उनका वक़्त आ पहुँचता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं

يُنَبِّئُ آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ ءَايَاتِي؟ فَمَنْ أَتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

ऐ औलादे आदम जब तुम में के (हमारे) पैग़म्बर तुम्हारे पास आए और तुमसे हमारे एहक़ाम बयान करे तो (उनकी इताअत करना क्योंकि जो शख्स परहेज़गारी और नेक काम करेगा तो ऐसे लोगों पर न तो (क़यामत में) कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आर्ज़दा खातिर (परेशान) होंगे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا ۖ عَنْهَا ۚ أَوَلَيْكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सरताबी कर बैठे वह लोग जहन्नुमी हैं कि वह उसमें हमेशा रहेंगे

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أَوَلَيْكَ يَنَالُهُمُ نَصِيبُهُمْ
مِّنَ الْكِتَابِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا ۚ أَإِنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِن
دُونِ اللَّهِ ۚ قَالُوا ۚ ضَلُّوا ۚ عَنَّا وَشَهِدُوا ۚ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا ۚ كُفْرِينَ

तो जो शख्स खुदा पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा फिर तो वह लोग हैं जिन्हें उनकी (तकदीर) का लिखा हिस्सा (रिज़क) वगैरह मिलता रहेगा यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) उनके पास आकर उनकी रूह कब्ज़ करेंगे तो (उनसे) पूछेंगे कि जिन्हें तुम खुदा को छोड़कर पुकारा करते थे अब वह (कहाँ हैं तो वह कुपफार) जवाब देंगे कि वह सब तो हमें छोड़ कर चल चंपत हुए और अपने खिलाफ आप गवाही देंगे कि वह बेशक काफ़िर थे

قَالَ ادْخُلُوا ۚ فِي أُمَمٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ ۚ كُلَّمَا
دَخَلَتْ أُمَّةٌ ۚ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا ۚ فِيهَا جَمِيعٌ ۚ قَالَتْ أُخْرَاهُمْ
لِأُولِهِمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ۚ ضِعْفًا ۚ مِّنَ النَّارِ ۚ قَالَ لِكُلٍّ ۚ ضِعْفٌ ۚ
وَلَكِن لَّا تَعْلَمُونَ

(तब खुदा उनसे) फरमाएगा कि जो लोग जिन व इन्स के तुम से पहले बसे हैं उन्हीं में मिलजुल कर तुम भी जहन्नुम वासिल हो जाओ (और) अहले जहन्नुम का ये हाल होगा कि जब उसमें एक गिरोह दाखिल होगा तो अपने साथी दूसरे गिरोह पर लानत करेगा यहाँ तक कि जब सब के सब पहुँच जाएंगे तो उनमें की पिछली जमात अपने से पहली जमात के वास्ते बददआ करेगी कि परवरदिगार उन्हीं लोगों ने हमें गुमराह किया था तो उन पर जहन्नुम का दोगुना अज़ाब फरमा (इस पर) खुदा फरमाएगा कि हर एक के वास्ते दो गुना अज़ाब है लेकिन (तुम पर) तुफ़ है तुम जानते नहीं

وَقَالَتْ أُولَئِهِمْ لِأَخْرَبَهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ ۚ فَذُوقُوا ۚ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُونَ

और उनमें से पहली जमाअत पिछली जमाअत की तरफ मुखातिब होकर कहेगी कि अब तो तुमको हमपर कोई फज़ीलत न रही पस (हमारी तरह) तुम भी अपने करतूत की बदौलत अज़ाब (के मज़े) चखो बेशक जिन लोगों ने हमारे आयात को झुठलाया

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا ۚ عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ

और उनसे सरताबी की न उनके लिए आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और वह बेहश्त ही में दाखिल होने पाएंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में होकर निकल जाए (यानि जिस तरह ये मुहाल है) उसी तरह उनका बेहश्त में दाखिल होना मुहाल है और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं उनके लिए जहन्नुम (की आग) का बिछौना होगा

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ ۚ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ

और उनके ऊपर से (आग ही का) ओढ़ना भी और हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं और जिन लोगों ने ईमान कुबुल किया

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और अच्छे अच्छे काम किये और हम तो किसी शख्स को उसकी ताकत से ज्यादा तकलीफ देते ही नहीं यही लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा जन्नत ही में रहा (सहा) करेंगे

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ ۖ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۚ وَقَالُوا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ
الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ ۚ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا
بِالْحَقِّ ۚ وَنُودُوا ۚ أَنْ تِلْكَمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और उन लोगों के दिल में जो कुछ (बुग़ाज़ व कीना) होगा वह सब हम निकाल (बाहर कर) देंगे उनके महलों के नीचे नहरें जारी होंगी और कहते होंगे शुक्र है उस खुदा का जिसने हमें इस (मंज़िले मक़सूद) तक पहुंचाया और अगर खुदा हमें यहाँ न पहुंचाता तो हम किसी तरह यहाँ न पहुंच सकते बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर दीने हक़ लेकर आये थे और उन लोगों से पुकार कर कह दिया जाएगा कि वह बेहिश्त हैं जिसके तुम अपनी कारगुज़ारियों की जज़ा में वारिस व मालिक बनाए गये हों

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا ۖ فَهَلْ
وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ ۚ قَالُوا ۚ نَعَمْ ۚ فَآذَنَ مُؤَذِّنٌ ۚ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى
الظَّالِمِينَ

और जन्नती लोग जहन्नुमी वालों से पुकार कर कहेंगे हमने तो बेशक जो हमारे परवरदिगार ने हमसे वायदा किया था ठीक ठीक पा लिया तो क्या तुमने भी जो तुमसे तम्हारे परवरदिगार ने वायदा किया था ठीक पाया (या नहीं) अहले जहन्नुम कहेंगे हाँ (पाया) एक मुनादी उनके दरमियान निदा करेगा कि ज़ालिमों पर खुदा की लानत है

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ

जो खुदा की राह से लोगों को रोकते थे और उसमें (ख़वामख़वाह) कज़ी (टेढ़ापन) करना चाहते थे और वह रोज़े आख़ेरत से इन्कार करते थे

وَيَبَيِّنُهُمَا حِجَابٌ ۖ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ ۚ يَعْرِفُونَ كُلًّا ۖ ۚ بِسِيمَاهُمْ ۚ وَنَادُوا ۚ
أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمْ عَلَيْكُمْ ۚ ۚ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ

और बेहश्त व दोज़ख के दरमियान एक हद फ़ासिल है और कुछ लोग आराफ़ पर होंगे जो हर शख्स को (बेहिश्ती हो या जहन्नुमी) उनकी पेशानी से पहचान लेंगे और वह जन्नत वालों को आवाज़ देंगे कि तुम पर सलाम हो या (आराफ़ वाले) लोग अभी दाखिले जन्नत नहीं हुए हैं मगर वह तमन्ना ज़रूर रखते हैं

﴿۹﴾ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصُرُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا ﴿۹﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और जब उनकी निगाहें पलटकर जहन्नुमी लोगों की तरफ जा पड़ेगीं (तो उनकी खराब हालत देखकर खुदा से अर्ज करेंगे) ऐ हमारे परवरदिगार हमें ज़ालिम लोगों का साथी न बनाना

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا ﴿۹﴾ يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا ﴿۹﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ

और आराफ वाले कुछ (जहन्नुमी) लोगों को जिन्हें उनका चेहरा देखकर पहचान लेंगे आवाज़ देंगे और और कहेंगे अब न तो तुम्हारा जत्था ही तुम्हारे काम आया और न तुम्हारी शेखी बाज़ी ही (सूद मन्द हुई)

أَهْوَلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ﴿۹﴾ ادْخُلُوا ﴿۹﴾ الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ

जो तुम दुनिया में किया करते थे यही लोग वह हैं जिनकी निस्बत तुम कसमें खाया करते थे कि उन पर खुदा (अपनी) रहमत न करेगा (देखो आज वही लोग हैं जिनसे कहा गया कि बेतकल्लुफ) बेहश्त में चलो जाओ न तुम पर कोई खौफ है और न तुम किसी तरह आर्ज़ुदा खातिर परेशानी होगी

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا ﴿۹﴾ عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ﴿۹﴾ قَالُوا ﴿۹﴾ إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهَا عَلَى الْكَافِرِينَ

और दोज़ख वाले अहले बेहिश्त को (लजाजत से) आवाज़ देंगे कि हम पर थोड़ा सा पानी ही उंडेल दो या जो (नेअमतों) खुदा ने तुम्हें दी है उसमें से कुछ (दे डालो दो तो अहले बेहिश्त जवाब में) कहेंगे कि खुदा ने तो जन्नत का खाना पानी काफिरों पर कतई हराम कर दिया है

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا ۖ وَلَعِبًا ۖ وَغَرَّتْهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسَلُهُمْ كَمَا
نَسُوا ۚ لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ

जिन लोगों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया था और दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी ने उनको फरेब दिया था तो हम भी आज (क्रयामत में) उन्हें (कसदन) भूल जाएंगे

وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً ۖ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

जिस तरह यह लोग (हमारी) आज की हुज़ूरी को भूलें बैठे थे और हमारी आयतों से इन्कार करते थे हालांकि हमने उनके पास (रसूल की मारफत किताब भी भेज दी है)

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ ۚ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شَفْعَاءَ فَيَشْفَعُوا ۚ لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا
نَعْمَلُ ۚ قَدْ خَسِرُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ

जिसे हर तरह समझ बूझ के तफसीलदार बयान कर दिया है (और वह) ईमानदार लोगों के लिए हिदायत और रहमत है क्या ये लोग बस सिर्फ अन्जाम (क्रयामत ही) के मुन्तज़िर है (हालांकि) जिस दिन उसके अन्जाम का (वक्त) आ जाएगा तो जो लोग उसके पहले भूले बैठे थे (बेसाख्ता) बोल उठेंगे कि बेशक हमारे परवरदिगार के सब रसूल हक़ लेकर आये थे तो क्या उस वक्त हमारी भी सिफरिश करने वाले हैं जो हमारी सिफारिश करें या हम फिर (दुनिया में) लौटाएं जाएं तो जो जो काम हम करते थे उसको छोड़कर दूसरे काम करें

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ يُغْشَىٰ اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ ۚ حَثِيثًا ۚ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ
بِأَمْرِهِ ۚ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۚ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

बेशक उन लोगों ने अपना सख्त घाटा किया और जो इफ़तेरा परदाज़िया किया करते थे वह सब गायब (ग़ल्ला) हो गयीं बेशक तुम्हारा परवरदिगार खुदा ही है जिसके (सिर्फ) 6 दिनों में आसमान और ज़मीन को पैदा किया फिर अर्श के बनाने पर आमादा हुआ वही रात को दिन का लिबास पहनाता है तो (गोया) रात दिन को पीछे पीछे तेज़ी से ढूँढती फिरती है और उसी ने आफ़ताब और माहताब और सितारों को पैदा किया कि ये सब के सब उसी के हुक्म के ताबेदार हैं

أَدْعُوا ۚ رَبِّكُمْ تَضَرُّعًا ۚ وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ ۚ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ

देखो हुकूमत और पैदा करना बस खास उसी के लिए है वह खुदा जो सारे जहाँ का परवरदिगार बरकत वाला है

وَلَا تُفْسِدُوا ۚ فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا ۚ وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ ۚ مِنَ الْمُحْسِنِينَ

(लोगों) अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके - चुपके दुआ करो, वह हद से तजाविज़ करने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता और ज़मीन में असलाह के बाद फसाद न करते फिरो और (अज़ाब) के खौफ से और (रहमत) की आस लगा के खुदा से दुआ मांगो

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا ۚ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ ۚ حَتَّىٰ إِذَا أَقْلَّتْ سَحَابًا ۚ ثَقَالًا ۚ أَسْقَنَهُ لِبَلَدٍ ۚ مَيِّتٍ ۚ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ۚ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

(क्योंकि) नेकी करने वालों से खुदा की रहमत यकीनन करीब है और वही तो (वह) खुदा है जो अपनी रहमत (अब्र) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाओ को भेजता है यहाँ तक कि जब हवाएं (पानी से भरे) बोझिल बादलों के ले उड़े तो हम उनको किसी शहर की की तरफ (जो पानी का नायाबी (कमी) से गोया) मर चुका था हँका दिया फिर हमने उससे पानी बरसाया, फिर हमने उससे हर तरह के फल ज़मीन से निकाले

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتُهُ ۚ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۚ ۚ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرِجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْأُمُورَ لِقَوْمٍ ۚ يَشْكُرُونَ

हम यूँ ही (क़यामत के दिन ज़मीन से) मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम लोग नसीहत व इबरत हासिल करो और उम्दा ज़मीन उसके परवरदिगार के हुक्म से उस सब्ज़ा (अच्छा ही) है और जो ज़मीन बड़ी है उसकी पैदावार खराब ही होती है

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ۖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا ۖ اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ۖ إِنَّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ

हम यू अपनी आयतों को उलेटफेर कर शुक्रगुजार लोगों के वास्ते बयान करते हैं बेशक हमने नूह को उनकी क्रौम के पास (रसूल बनाकर) भेजा तो उन्होंने (लोगों से) कहाकि ऐ मेरी क्रौम खुदा की ही इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं है और मैं तुम्हारी निस्बत (क्रयामत जैसे) बड़े खौफनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ ۖ إِنَّا لَنَرُكَ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۖ

तो उनकी क्रौम के चन्द सरदारों ने कहा हम तो यक्रीनन देखते हैं कि तुम खुल्लम खुल्ला गुमराही में (पड़े) हो

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلٰلَةٌ ۖ وَلَكِنِّي رَسُولٌ ۖ مِنْ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۖ

तब नूह ने कहा कि ऐ मेरी क्रौम मुझ में गुमराही (वगैरह) तो कुछ नहीं बल्कि मैं तो परवरदिगारे आलम की तरफ से रसूल हूँ

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ

तुम तक अपने परवरदिगार के पैगामात पहुचाएं देता हूँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी खैर ख्वाही करता हूँ और खुदा की तरफ से जो बातें मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते

أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ ۖ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ ۖ مِنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا ۖ وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۖ

क्या तुम्हें उस बात पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्ही में से एक मर्द (आदमी) के ज़रिए से तुम्हारे परवरदिगार का ज़िक्र (हुक्म) आया है ताकि वह तुम्हें (अज़ाब से) डराए और ताकि तुम परहेज़गार बनो और ताकि तुम पर रहम किया जाए

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۖ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۖ

इस पर भी लोगों ने उनको झुठला दिया तब हमने उनको और जो लोग उनके साथ कशती में थे बचा लिया और बाक़ी जितने लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था सबको डुबो मारा ये सब के सब यक्रीनन अन्धे लोग थे

﴿۱﴾ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودٌ ﴿۲﴾ قَالَ يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ﴿۳﴾ أَفَلَا تَتَّقُونَ

और (हमने) क्रौम आद की तरफ उनके भाई हूद को (रसूल बनाकर भेजा) तो उन्होंने लोगों से कहा ऐ मेरी क्रौम खुदा ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम (खुदा से) डरते नहीं हो

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿۱﴾ مِنْ قَوْمِهِ ﴿۲﴾ إِنَّا لَنَرُكَ فِي سَفَاهَةٍ ﴿۳﴾ وَإِنَّا لَنَنظُنُّكَ مِنَ الْكَذِبِينَ

(तो) उनकी क्रौम के चन्द सरदार जो काफिर थे कहने लगे हम तो बेशक तुमको हिमाकत में (मुब्तिला) देखते हैं और हम यकीनी तुम को झूठा समझते हैं

قَالَ يُقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ ﴿۱﴾ وَلَكِنِّي رَسُولٌ ﴿۲﴾ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ

हूद ने कहा ऐ मेरी क्रौम मुझमें में तो हिमाकत की कोई बात नहीं बल्कि मैं तो परवरदिगार आलम का रसूल हूँ

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا ﴿۱﴾ لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ

मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार के पैगामात पहुँचाए देता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा खैरख्वाह हूँ

أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ ﴿۱﴾ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ ﴿۲﴾ مِّنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ﴿۳﴾ وَأَذْكُرُوا ﴿۴﴾ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ ﴿۵﴾ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ ﴿۶﴾ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصَدًا ﴿۷﴾ طَةً ﴿۸﴾ فَاذْكُرُوا ﴿۹﴾ ءَالَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

क्या तुम्हें इस पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म तुम्हारे पास तुम्ही में एक मर्द (आदमी) के ज़रिए से (आया) कि तुम्हें (अजाब से) डराए और (वह वक्त) याद करो जब उसने तुमको क्रौम नूह के बाद खलीफा (व जानशीन) बनाया और तुम्हारी खिलाफत में भी बहुत ज्यादाती कर दी तो खुदा की नेअमतों को याद करो ताकि तुम दिली मुरादे पाओ

قَالُوا ۖ أَجِئْنَا لِنُعْبَدَ اللَّهَ وَحْدَهُ ۚ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۚ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

तो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि सिर्फ खुदा की तो इबादत करें और जिनको हमारे बाप दादा पूजते चले आए छोड़ बैठें पस अगर तुम सच्चे हो तो जिससे तुम हमको डराते हो हमारे पास लाओ

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ ۖ وَغَضَبٌ ۚ أَتُجَدِّلُونِنِي فِيْ أَسْمَاءٍ ۚ سَمِيتُمُوهَا أَنْتُمْ وَّآبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطٰنٍ ۖ فَانْتَظِرُوا ۚ إِنِّي مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ

हूद ने जवाब दिया (कि बस समझ लो) कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब नाज़िल हो चुका क्या तुम मुझसे चन्द (बुतों के फर्जी) नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने (स्वाहमस्वाह) गढ़ लिए हैं हालांकि खुदा ने उनके लिए कोई सनद नहीं नाज़िल की पस तुम (अज़ाबे खुदा का) इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तिज़र हूँ

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۚ بِرَحْمَةٍ ۚ مِنَّا وَقَطَّعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ وَمَا كَانُوا ۚ مُؤْمِنِينَ

आखिर हमने उनको और जो लोग उनके साथ थे उनको अपनी रहमत से नजात दी और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था हमने उनकी जड़ काट दी और वह लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ۚ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ ۚ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ هٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ ءَايَةٌ ۚ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِيْ أَرْضِ اللَّهِ ۚ وَلَا تَمْسُوهَا بِسُوءٍ ۚ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

और (हमने क्रौम) समूद की तरफ उनके भाई सालेह को रसूल बनाकर भेजा तो उन्होंने (उन लोगों से कहा) ऐ मेरी क्रौम खुदा ही की इबादत करो और उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं है तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाज़ेए और रौशन दलील आ चुकी है ये खुदा की भेजी हुई ऊँटनी तुम्हारे वास्ते एक मौजिज़ा है तो तुम लोग उसको छोड़ दो कि खुदा की ज़मीन में जहाँ चाहे चरती फिरे और उसे कोई तकलीफ़ ना पहुंचाओ वरना तुम दर्दनाक अज़ाब में गिरफ्तार हो जाओगे

وَأَذْكُرُوا ۚ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ ۚ بَعْدِ عَادٍ ۚ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ
سُھُولِهَا قُصُورًا ۚ وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۚ فَادْكُرُوا ۚ ءَالَآءَ اللَّهِ وَلَا تَعْتُوا ۚ فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

और वह वक्त याद करो जब उसने तुमको क्रौम आद के बाद (ज़मीन में) खलीफा (व जानशीन) बनाया और तुम्हें ज़मीन में इस तरह बसाया कि तुम हमवार व नरम ज़मीन में (बड़े-बड़े) महल उठाते हो और पहाड़ों को तराश के घर बनाते हो तो खुदा की नेअमतों को याद करो और रूए ज़मीन में फसाद न करते फिरो

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۚ مِنْ قَوْمِهِ ۚ لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا ۚ لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ
أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صُلْحًا ۚ مُرْسَلٌ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا ۚ إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ ۚ مُؤْمِنُونَ

तो उसकी क्रौम के बड़े बड़े लोगों ने बेचारें ग़रीबों से उनमें से जो ईमान लाए थे कहा क्या तुम्हें मालूम है कि सालेह (हक़ीकतन) अपने परवरदिगार के सच्चे रसूल हैं - उन बेचारों ने जवाब दिया कि जिन बातों का वह पैग़ाम लाए हैं हमारा तो उस पर ईमान है

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۚ إِنَّا بِالَّذِي ءَامَنْتُمْ بِهِ ۚ كَفِرُونَ

तब जिन लोगों को (अपनी दौलत दुनिया पर) घमन्ड था कहने लगे हम तो जिस पर तुम ईमान लाए हो उसे नहीं मानते

فَعَقَرُوا ۚ النَّاقَةَ وَعَتُوا ۚ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا ۚ يُصْلِحُ أُنْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ

गरज़ उन लोगों ने ऊँटनी के कूचें और पैर काट डाले और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरताबी की और (बेबाकी से) कहने लगे अगर तुम सच्चे रसूल हो तो जिस (अज़ाब) से हम लोगों को डराते थे अब लाओ

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا ۚ فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ

तब उन्हें ज़लज़ले ने ले डाला और वह लोग ज़ानू पर सर किए (जिस तरह) बैठे थे बैठे के बैठे रह गए

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمٍ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَا تُحِبُّونَ
النّٰصِحِيْنَ

उसके बाद सालेह उनसे टल गए और (उनसे मुख़ातिब होकर) कहा मेरी क़ौम (आह) मैंने तो अपने परवरदिगार के पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिए थे और तुम्हारे ख़ैरख़्वाही की थी (और ऊँच नीच समझा दिया था) मगर अफ़सोस तुम (ख़ैरख़्वाह) समझाने वालों को अपना दोस्त ही नहीं समझते

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ ؕ اَتَاْتُوْنَ الْفَحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ ؕ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ

और (लूत को हमने रसूल बनाकर भेजा था) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि (अफ़सोस) तुम ऐसी बदकारी (अग़लाम) करते हो कि तुमसे पहले सारी खुदाई में किसी ने ऐसी बदकारी नहीं की थी

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً ؕ مِّنْ دُوْنِ النِّسَاءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ

हाँ तुम औरतों को छोड़कर शहवत परस्ती के वास्ते मर्दों की तरफ़ माएल होते हो (हालाकि उसकी ज़रूरत नहीं) मगर तुम लोग कुछ हो ही बेहूदा

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖ ؕ اِلَّا اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ؕ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ

सिर्फ़ करने वालों (को नुत्फे को ज़ाए करते हो उस पर उसकी क़ौम का उसके सिवा और कुछ जवाब नहीं था कि वह आपस में कहने लगे कि उन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो क्योंकि ये तो वह लोग हैं जो पाक साफ़ बनना चाहते हैं)

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهُۥٓ اِلَّا اَمْرٰتَهٗ ؕ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ

तब हमने उनको और उनके घर वालों को नज़ात दी मगर सिर्फ़ (एक) उनकी बीबी को कि वह (अपनी बदआमाली से) पीछे रह जाने वालों में थी

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ آ ؕ فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ

और हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेह बरसाया-पस ज़रा ग़ौर तो करो कि गुनाहगारों का अन्जाम आखिर क्या हुआ

وَالِى مَدِينَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يُقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ ۖ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا ۖ الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا ۖ النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا ۖ فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ ۖ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

और (हमने) मदयन (वालों के) पास उनके भाई शुएब को (रसूल बनाकर भेजा) तो उन्होंने (उन लोगों से) कहा ऐ मेरी क्रौम खुदा ही की इबादत करो उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं (और) तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक वाजेए व रौशन मौजिज़ा (भी) आ चुका तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी (खरीदी हुई) चीज़ में कम न दिया करो और ज़मीन में उसकी असलाह व दुरुस्ती के बाद फसाद न करते फिरो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है

وَلَا تَقْعُدُوا ۖ بِكُلِّ صِرَاطٍ ۖ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِ ۖ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ وَأَنْذَرُوا ۖ إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا ۖ فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوا ۖ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُفْسِدِينَ

और तुम लोग जो रास्तों पर (बैठकर) जो खुदा पर ईमान लाया है उसको डराते हो और खुदा की राह से रोकते हो और उसकी राह में (स्वाहमास्वाह) कज़ी ढूँढ निकालते हो अब न बैठा करो और उसको तो याद करो कि जब तुम (शुमार में) कम थे तो खुदा ही ने तुमको बढ़ाया, और ज़रा ग़ौर तो करो कि (आखिर) फसाद फैलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ

وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ ۖ مِنْكُمْ ءَامَنُوا ۖ بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ ۖ وَطَائِفَةٌ ۖ لَمْ يُؤْمِنُوا ۖ فَأَصْبِرُوا ۖ حَتَّى يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ

और जिन बातों का मैं पैग़ाम लेकर आया हूँ अगर तुममें से एक गिरोह ने उनको मान लिया और एक गिरोह ने नहीं माना तो (कुछ परवाह नहीं) तो तुम सब से बैठे (देखते) रहो यहाँ तक कि खुदा (खुद) हमारे दरमियान फैसला कर दे, वह तो सबसे बेहतर फैसला करने वाला है